2. ल्हासा की ओर

—राहुल सांकृत्यायन

पाठ्यपुस्तक प्रश्न

प्रश्न 1. थोङ्ला के पहले के आखिरी गाँव पहुँचने पर भिखमंगे के वेश में होने के बावजूद लेखक को ठहरने के लिए उचित स्थान मिला, जबकि दूसरी बार यात्रा के समय भद्र वेश भी उन्हें उचित स्थान नहीं दिला सका। क्यों ?

उत्तर—तिब्बत में यात्रियों के लिए ठहरने की व्यवस्था बहुत कम है। वहाँ के लोग संबंधों को महत्व देते हैं। जान-पहचान के आधार पर यात्री को ठहरने के लिए अच्छा स्थान मिल जाता है। उनके विचार में भिखमंगा होना कोई बुरी बात नहीं है। मुन्शी की जान-पहचान के आधार पर उन्हें थोङ्ला के पहले के आखिरी गाँव में ठहरने के लिए अच्छा स्थान मिल गया। हाँ, तीसरे

Scanned by TapScanner

समय भद्र वेश में होने पर भी उन्हें उचित स्थान न मिल पाया। यह सब उस समय लोगों की मनोवृत्ति पर निर्भर करता है। शाम के वक्त वहाँ के लोग छङ् पीकर होश-हवास खो बैठते हैं। इस दशा में उनसे कोई काम की बात नहीं की जा सकती।

प्रश्न 2. उस समय के तिब्बत में हथियार का कानून न रहने के कारण यात्रियों को किस प्रकार का भय बना रहता था ?

उत्तर–उस समय (1929-30) तिब्बत में हथियार के बारे में कोई कानून न था। लोगों में असुरक्षा की भावना थी। अतः लोग खुलेआम पिस्तौल और बंदूकों को लाठी की तरह लिए फिरते थे। वहाँ अनेक ऐसे निर्जन स्थान भी थे, जहाँ आसानी से किसी की हत्या की जा सकती थी। सरकार खुफिया विभाग तथा पुलिस पर आवश्यक खर्च नहीं करती थी। वहाँ कोई गवाह तक नहीं मिलता था, अतः यात्रियों को जान-माल का खतरा बना रहता था।

प्रश्न 3. लेखक लङ्कोर के मार्ग में अपने साथियों से किस कारण पिछड़ गया ?

उत्तर–लेखक दो कारणों से अपने साथियों से पिछड़ गया–

(1) उसका घोड़ा बहुत सुस्त था। वह बहुत धीमे चल रहा था। यह पता ही नहीं चलता था कि वह आगे जा रहा है या पीछे। जोर देने पर वह और सुस्त पड़ जाता था।

(2) वह रास्ता भटक गया था। एक जगह से दो रास्ते फूट रहे थे। दाहिना रास्ता लङ्कोर जाता था, पर वह बाएँ रास्ते पर चल पड़ा। मील-डेढ़ मील चलने के पश्चात् उसे अपनी भूल का पता चला और उसे लौटना पड़ा। बाद में उसने सही रास्ता पकड़ा।

प्रश्न 4. लेखक ने शेकर विहार में सुमति को उनके यजमानों के पास जाने से रोका, परंतु दूसरी बार रोकने का प्रयास क्यों नहीं किया ?

उत्तर–लेखक ने पहली बार शेकर विहार में सुमति को उनके यजमानों के पास जाने से इसलिए रोका था क्योंकि इसमें काफी समय लगने की संभावना थी। सुमति अपने सभी यजमानों को गंडे बाँटना चाहते थे। इस कारण लेखक को अधिक प्रतीक्षा करनी पड़ती।

दूसरी बार, लेखक को एक मंदिर में हस्तलिखित 103 पोथियाँ पढ़ने को मिल गईं। प्रत्येक पोथी 15 सेर से कम न थी। इन्हें पढ़ने के लिए समय की आवश्यकता थी, अतः लेखक ने सुमति को रोकने का प्रयास नहीं किया और उन्हें यजमानों के पास जाने की अनुमति दे दी।

प्रश्न 5. अपनी यात्रा के दौरान लेखक को किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा ?

उत्तर–अपनी यात्रा के दौरान लेखक को निम्नलिखित कठिनाइयों का सामना करना पड़ा–

(1) यात्रा के दौरान दूर-दूर तक आबादी न होने के कारण उन्हें भोजन की कठिनाई हुई।

(2) वापसी में ठहरने के लिए जगह मिलने में कठिनाई हुई।

(3) 16-17 हजार फीट ऊँचे पहाड़ों को लाँघना पड़ा।

(4) भरिया (भारवाहक) न मिलने पर अपना सामान स्वयं ढोना पड़ा।

(5) तेज धूप का सामना करना पड़ा।

(6) सुनसान इलाकों से गुजरना पड़ा तथा कई प्रकार के खतरों का सामना करना पड़ा।

प्रश्न 6. प्रस्तुत यात्रा-वृत्तांत के आधार पर बताइए कि उस समय का तिब्बती समाज कैसा था ?

उत्तर–इस यात्रा-वृत्तांत के आधार पर कहा जा सकता है कि उस समय का तिब्बती समाज जाति-पाँति और पर्दा प्रथा के बंधनों से मुक्त था। वहाँ छुआछूत की भावना न थी। अपरिचित लोगों का अतिथि-सत्कार भी किया जाता था। धार्मिक अंधविश्वास अवश्य था। सुमति के गंडे बाँटने से इसका पता चलता है। उस समय तिब्बती लोग छङ् पीते थे और शाम के समय तक होश-हवास खो बैठते थे। तब वे अपरिचित लोगों को घर में घुसने नहीं देते थे। तिब्बत की जमीनें जागीरों में बँटी हुई थीं। इन पर मठों का कब्जा था। मजदूर बेगार में मिल जाते थे।

Scanned by TapScanner

प्रश्न 7. 'सुमति के यजमान और अन्य परिचित लोग लगभग हर गाँव में मिले।' इस आधार पर आप सुमति के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं का चित्रण कर सकते हैं ?

उत्तर–अपनी तिब्बत-यात्रा के दौरान लेखक की भेंट सुमति नामक मंगोल बौद्ध भिक्षु से हुई। उनका असली नाम लोब्ज़ङ् शेख था। इसका अर्थ है–सुमति प्रज्ञ। लेखक ने उसे सुमति के नाम से पुकारा है। यात्रा-वृत्तांत के आधार पर सुमति के व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताएँ उभरती हैं–

– वे मिलनसार स्वभाव के थे और सबका ध्यान रखते थे।

– तिब्बत के निवासी उनका सम्मान करते थे। वे एक धर्मगुरु के रूप में सम्मानित थे।

– यद्यपि उन्हें क्रोध जल्दी आ जाता था, पर शीघ्र ही उतर भी जाता था।

– उन्होंने यात्रा के दौरान लेखक की काफी सहायता की। अत: उन्हें परोपकारी कहा जा सकता है।

– वे थोड़े लालची स्वभाव के अवश्य थे। गंडे बाँटने तथा लेखक द्वारा धन दिए जाने की बात स्वीकार कर लेने में उनका लालच उभरता है।

प्रश्न 8. यात्रा-वृत्तांत के आधार पर तिब्बत की भौगोलिक स्थिति का शब्द-चित्र प्रस्तुत करें। यह आपके राज्य/शहर से कैसे भिन्न है ?

उत्तर–तिब्बत पहाड़ी और पठारी भू-भाग है। यहाँ पहुँचना सरल नहीं है। भारत से यहाँ आने के गिने-चुने मार्ग ही हैं। तिब्बत समुद्र-तट से 16-17 हजार फुट की ऊँचाई पर स्थित है। ऊँचाई पर डाँड़े हैं। रास्ते ऊँचे-नीचे और बीहड़ हैं। पहाड़ों के अंतिम सिरों तथा नदियों के मोड़ पर खतरनाक सूने प्रदेश हैं। यहाँ दूर-दूर तक आबादी दिखाई नहीं देती, अत: डाकुओं का खतरा बना रहता है। यहाँ पूरब से पश्चिम की ओर हिमालय के श्वेत बर्फ के हजारों शिखर दिखाई देते हैं। यहाँ के पहाड़ बिल्कुल नंगे हैं। बीच-बीच में पहाड़ी मैदान भी हैं। यहाँ कड़ाके की ठंड पड़ती है। यहाँ की सारी भूमि जमींदारों के कब्ज़े में हैं। ज़मींदारी का काम मठों द्वारा भी संचालित होता है।

Scanned by TapScanner